समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ३.५०

# लोक कल्याण सेतु

प्रकाशन दिनांक :
१५ अक्टूबर २०१४
वर्ष : १८ अंक : ४
(निरंतर अंक : २०८)

मासिक समाचार पत्र

सुप्रचार विशेषांक

"भारतीय जनता सब जानती है।
आरोप ११०% बोगस हैं,
FABRICATED (बनावटी) हैं।
सत्य की जय होगी।"
- पूज्य संत श्री आशारामजी बापू

श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

"हम आपको देश के प्रधानमंत्री के रूप में देखना चाहते हैं।"

## संकल्प हुआ साकार...

पढ़ें आवरण पृष्ठ ३

पूज्य बापूजी के लिए रोती-सिसकती महिला-शक्ति

पूर्व प्रधानमंत्री श्री एच.डी. देवेगौड़ा

पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी

# संगठित हो के अपनी संस्कृति की रक्षा करो

- पूज्य बापूजी

हिन्दू धर्म को बदनाम करनेवाले विदेशी लोग पिछले १७०० वर्षों से हिन्दू धर्म को नीचा दिखाने का षड्यंत्र चला रहे हैं और वे लड़ाने के लिए हिन्दुओं को ही आगे करते हैं, वे लोग पर्दे के पीछे रहते हैं, जिससे हिन्दू ही हिन्दू धर्म की निंदा करें और हिन्दू-हिन्दू आपस में लड़ मरें। शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वतीजी, माँ अमृतानंदमयी जैसे कई संतों को बदनाम करवाया गया।

इतना-इतना अंग्रेजों ने जुल्म किया लेकिन हिन्दू धर्म की महानता से हमने उनके जुल्म को उखाड़ के फेंक दिया। अक्सर ऐसे आँधी-तूफान आते रहते हैं। अपने को बुद्धिमान होकर, संगठित हो के अपनी संस्कृति का फायदा उठाना चाहिए। हमको विदेशी शक्तियाँ लड़वाना चाहती हैं और यदि हम वही करें तो फिर हमारी संस्कृति की हानि होगी। मुझे तो एक दृष्टांत-कथा याद आती है कि कुल्हाड़ी का सिर आया पेड़ के पास, बोला : ''मैं तुझे काट दूँगा।''

पेड़ हँसा, बोला : ''मैं २०० मन का, तू ४०० ग्राम का; निगुरे ! चल भाग यहाँ से।''

थोड़ी देर के बाद वह लकड़ी का हत्था डलवा के आया, बोला : ''क्या खयाल है अब ?''

पेड़ ने सिर झुका दिया, बोला : ''जब अपनेवाले ही काटनेवाले के साथ जुड़ते हैं तो क्या होगा ?''

ऐसे ही जो विदेशी ताकतें हमारे देश को तोड़ना चाहती हैं उन्हींके हम हत्थे बन के कुछ पैसे लेकर किसी संस्था के पीछे पड़ जायें तो हमारी संस्कृति का क्या होगा ? जो भिड़ानेवाली ताकतें पर्दे के पीछे से भिड़ाती हैं, वे भिड़ायें और हम भिड़ते रहें तो हमारी संस्कृति की हानि होती है।

मेरे ५० साल में ऐसा कुप्रचार २-४ बार आया और जब-जब कुप्रचार आया उसके बाद साधकों की संख्या बढ़ती गयी। लेकिन अब का कुप्रचार बहुत लम्बी साजिश है, खूब पैसे खर्च करके हुआ है और बहुत लोगों को इसमें जोड़ा गया है। अब के कुप्रचार का जो शिकार न बने और टिक गया तो भाई ! वह तो फिर पृथ्वी पर का देव है।

अशुभ से लोहा लेने के लिए शुभ लोगों को संगठित होना चाहिए, आवाज उठानी चाहिए। संसार है, शुभ-अशुभ चलता रहता है। अशुभ से दबो मत और शुभ का अभिमान करो मत। प्रीतिपूर्वक भगवान का जप करो और शुभ संकल्प करो।

भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिए आप रोज गहरा श्वास लेकर ॐकार का जप करें, आखिर में 'म' को घंटनाद की नाईं गूँजने दें। ऐसे ११ संस्कृति रक्षक प्राणायाम करके अपना संकल्प वातावरण में फेंको। इसमें विश्वमानव का मंगल है। ॐ... ॐ... ॐ... हो सके तो सुबह ४ से ५ बजे के बीच करें। यह स्वास्थ्य के लिए और सभी प्रकार से बलप्रद होगा। यदि इस समय न कर पायें तो किसी भी समय करें पर करें अवश्य। ऐसे ११ प्राणायाम फेफड़ों की शक्ति तो बढ़ायेंगे, रोगप्रतिकारक शक्ति तो बढ़ायेंगे साथ ही वातावरण में भी भारतीय संस्कृति की रक्षा में सफल होने की शक्ति अर्जित करने का आपके द्वारा महायज्ञ होगा।

निर्दोष हृदय की आह ईश्वरीय कोप ले आती है। जुल्मी का जुल्म तेज होता है न, तो तुरंत दंड मिलता है। जुल्मी के पहले के कर्म कुछ पुण्यदायी हैं तो उसको देर से दंड मिलता है लेकिन जुल्म करने का फल तो मिलता, मिलता और मिलता ही है ! न चाहे तो भी मिलता है। यह कर्म का संविधान है। ईश्वर का संविधान बहुत पक्का है। झूठ 'झूठ' होता है, सत्य 'सत्य' होता है। सत्य की जय होगी।

# लोक कल्याण सेतु मासिक समाचार पत्र

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : १८ अंक : ४
भाषा : हिन्दी (निरंतर अंक : २०८)
प्रकाशन दिनांक : १५ अक्टूबर २०१४ मूल्य : ₹ ३.५०

**स्वामी :** संत श्री आशारामजी आश्रम
**प्रकाशक और मुद्रक :** राजेश बी. कारवानी
**प्रकाशन-स्थल :** संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
**मुद्रण-स्थल :** हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.) - १७३०२५.
**सम्पादक :** सिद्धनाथ अग्रवाल

**सदस्यता शुल्क :**
**भारत में :** (१) वार्षिक : ₹ ३० (२) द्विवार्षिक : ₹ ५० (३) पंचवार्षिक : ₹ ११० (४) आजीवन : ₹ ३००
**विदेशों में :** (१) पंचवार्षिक : *US $ 50* (२) आजीवन : *US $ 125*

**सम्पर्क पता :** 'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

★ *e-mail : lokkalyansetu@ashram.org* ✲ *ashramindia@ashram.org*
★ *web-site : www.lokkalyansetu.org* ✲ *www.ashram.org*



Opinions expressed in this news paper are not necessarily of the editorial board. Subject to Ahmedabad Jurisdiction.


'लोक कल्याण सेतु' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्र व्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक और सदस्यता क्रमांक अवश्य लिखें।

**टीवी चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग**

A2Z NEWS — रोज सुबह ७-३० व रात्रि १० बजे

मंगलमय सुबह — www.ashram.org पर उपलब्ध

## इस अंक में...


- संगठित हो के अपनी संस्कृति की रक्षा करो २
- आखिर कौन हैं ये ? - डॉ. प्रतिभा शर्मा ३
  - एक निष्पक्ष, सच्ची रिपोर्ट
  - सत्य की खोज में जोधपुर की ओर...
  - अगाध श्रद्धा
  - आखिर कौन हैं ये ?
  - मेरी उत्सुकता बढ़ती गयी...
  - लेकिन यह हकीकत है
  - अनोखी गुरुदक्षिणा
  - इतना दुष्प्रचार ! कुछ तो कारण होगा...
  - है जवाब आपके पास ?
- दीपक चौरसिया पर मँडरा रहे हैं गिरफ्तारी के बादल - श्री आर.एन. ठाकुर १३
- सभी शिष्य रक्षा पाते हैं, सर्वव्याप्त गुरु बचाते हैं १४
- इन पुण्यदायी तिथियों का लाभ लेना न भूलें... १४
- आरोप लगानेवाली लड़की निकली बालिग १५
- लड़की के शरीर पर नहीं थे कोई खरोंच के निशान : चिकित्सक १५
- आया वर्षभर के लिए ताकत जुटाने का काल १६
- गुरुभक्तों के खुल गये भाग... १७
- Twitter erupts in support of Asharamji bapu १७
- झूठे आरोपों से सावधान ! १८
- आप कहते हैं... १९
- जन-आंदोलन २०


# आखिर कौन है ये ?


- डॉ. प्रतिभा शर्मा
एम.ए., एम.फिल.,
एम.बी.ए., पीएच.डी.


## एक निष्पक्ष, सच्ची रिपोर्ट

**(देख-सुन के या पढ़कर किसीके बारे में अपना लेख बनाने का काम तो बहुतांश पत्रकार-लेखक करते हैं लेकिन यह रिपोर्ट एक जिज्ञासु व निष्पक्ष लेखिका द्वारा अपने प्रत्यक्ष अनुभव के आधार पर बनायी गयी है।)**

➡ एक मुद्दे की सच्चाई जानने की इच्छा हुई जो पिछले अनेक (चौदह) महीनों से देश-विदेश के मीडिया में छाया हुआ है - 'नाबालिग के यौन-शोषण के आरोप में विश्व के प्रसिद्ध नामी संत आशाराम बापू जेल में।' सिर्फ बापू ही नहीं, कई तरह के आरोप विगत कई वर्षों से देश के जाने-माने संतों पर लगते रहे हैं और उन्हें जेल भी जाना पड़ा है। लेकिन आज तक किसी भी संत पर कोई भी आरोप सिद्ध नहीं हुआ है बल्कि वे निर्दोष छूटकर बाहर आये हैं। आज फिर एक संत पर आरोप लगे हैं और वे जेल में हैं। विचारणीय पक्ष यह है कि इन संत पर लगे आरोप का आधार क्या है ? क्योंकि नये रेप-निरोधक कानून बनने के बाद कइयों पर झूठे आरोप लगने लगे हैं और उसमें कई तो झूठे साबित भी हुए हैं। क्या ये संत भी अन्य संतों की तरह निर्दोष छूटकर बाहर आयेंगे ? अगर ऐसा होता है तो

फिर मीडिया जो दिखा रहा है वह झूठ है ? अगर संत आशाराम बापू पर लगे आरोप सही हैं तो फिर उन करोड़ों भक्तों (जिनमें महिलाएँ तथा लड़कियाँ भी शामिल हैं) की श्रद्धा का रहस्य क्या है ? उनके ४२५ आश्रमों व उनमें रह रहे हजारों साधकों तथा निःशुल्क चल रहे हजारों 'बाल संस्कार केन्द्रों' आदि की वजह क्या है ? ये सारे प्रश्न मेरे जेहन में लगातार घूम रहे हैं और इन्हीं प्रश्नों का उत्तर ढूँढ़ने के लिए मैंने जोधपुर जाने का निर्णय किया।

## सत्य की खोज में जोधपुर की ओर...

जब मैं जोधपुर के उस केन्द्रीय कारागृह के मुख्य द्वार पर पहुँची, जहाँ बापू कई महीनों से हैं, तो वहाँ खड़े लोगों ने बताया : "आज रविवार है, कैदियों से मुलाकात का दिन है।"

अभी वहाँ करीब ३०-४० लोग ही खड़े थे परंतु कुछ ही समय में लोगों के आने का सिलसिला चालू हुआ तो अच्छी-खासी भीड़ जेल के सामने हो गयी, जिसमें सभी आयुवर्ग की महिलाएँ, पुरुष एवं बच्चे थे। उसमें भी महिलाओं की संख्या ज्यादा थी।

मैंने जेल के मुख्य द्वार पर खड़े पुलिसवालों को अपना परिचय देते हुए कुछ जानकारी माँगी : "यहाँ पर आशाराम बापू के अलावा और कितने कैदी हैं ? आज इतनी भीड़ क्यों हो रही है ?"

सिपाही बोला : "लगभग १४०० कैदियों का जेल है, आज कैदियों से मुलाकात का दिन है। ये बाबा के दर्शन की भीड़ है।"

"क्या ये सब लोग आशाराम बापू के ही भक्त हैं या और अन्य लोग भी हैं ?"

इस पर सिपाही ने थोड़ा चिढ़ते हुए कहा : "अरे ! क्या बतायें, हम तो परेशान हो गये हैं। पहले यहाँ इतनी सख्त ड्यूटी नहीं करनी पड़ती थी। अभी तो २४ घंटे चौकन्ना रहना पड़ता है। पर मानना पड़ेगा इन लोगों को, इतने महीने हो गये बाबा को यहाँ आये, पर एक दिन भी ऐसा नहीं गया जब उनके दर्शन करनेवालों की भीड़ नहीं आयी हो। समझ में नहीं आता, इतने आरोप लगने के बाद भी इन लोगों की श्रद्धा क्यों टिकी हुई है ! कभी-कभी ऐसा लगता है कि बाबा में कुछ तो है।"

सिपाही की बात सुनकर मेरा माथा ठनका, मैंने कई बार सुना था कि 'सबसे ज्यादा भीड़ अगर किसीके सत्संग में होती है तो वे संत आशाराम बापू ही हैं।' इतने बड़े संत को इस तरह के आरोप के चलते जेल में रहना पड़ रहा है !

यही सब सोचते हुए मैं जेल के मुख्य द्वार के बाहर एक पत्थर पर बैठ गयी। इतने में मेरे नजदीक बैठी एक लड़की के पास एक पुलिस ऑफिसर आकर बोला : "आप कहाँ से आयी हो ?"

उसने बताया कि "मैं महाराष्ट्र से आयी हूँ।"

"आप इतनी दूर से क्यों आयी हो ?"

# अगाध श्रद्धा

"आशारामजी बापू के दर्शन करने।" (यह बोलकर वह लड़की फिर से शांत होकर बैठ गयी।)

"क्या आपको सच में लगता है कि आपके बापू निर्दोष हैं ?"

"मेरे बापू निर्दोष थे, हैं और रहेंगे।" उस लड़की का इतना तेज उत्तर पाकर वह ऑफिसर उस लड़की के थोड़ा पास आया और बोला : "बहन ! हम भी जानते हैं कि बापू एकदम निर्दोष हैं। और सच में, वे कोई साधारण पुरुष नहीं एक दिव्य पुरुष हैं।"

लड़की ने पलटकर पूछा : "आप यह कैसे कह सकते हैं ?"

तब उस पुलिसवाले ने बताया : "बापूजी की सुरक्षा में कई ऑफिसर रहते हैं। एक बार मेरा भी नम्बर लगा। मेरी ड्यूटी बाबाजी को चेक करने की थी। मैं बाबाजी के शरीर को छूकर चेक कर रहा था तो बाबाजी ने कहा कि "बाहर से क्या चेक कर रहे हो ? भीतर चेक करो कि तुम कौन हो ?" यह सुनते ही मुझे कुछ अजीब-सा अनुभव हुआ। बस, बहनजी ! तब से हमें तो पक्का हो गया कि बाबाजी बिल्कुल निर्दोष हैं और ये कोई महापुरुष हैं।"

उसने इतना तक कह दिया कि "बापूजी के बाहर आने के बाद हम उनके अहमदाबाद आश्रम में जरूर जायेंगे और मंत्रदीक्षा भी लेंगे।"

ऑफिसर के मुँह से ऐसी बातें सुनकर मैं तो

अवाक् रह गयी । फिर तो मेरी जिज्ञासा और बढ़ गयी और मैं सबके साथ आकर भीड़ में शामिल हो गयी ।

## अगाध श्रद्धा

कुछ महिलाओं से मैंने पूछा : "आप बापू के दर्शन के लिए आयी हो ?"

उन्होंने मुझे सिर से पैर तक देखा, कोई जवाब नहीं दिया, दूसरी ओर चली गयीं । मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ । इसी बीच एक ३०-३२ साल का युवक मेरे पास आया और बोला : "वे आपको पत्रकार समझ रही हैं, इसलिए आपकी बात का उन्होंने जवाब नहीं दिया ।"

मैंने कहा : "भाई, अगर मैं पत्रकार हूँ तो भी क्या मेरी बात का जवाब नहीं देना चाहिए ?"

युवक : "दरअसल, पिछले कई महीनों से मीडिया ने बापूजी और आश्रमों पर कई घिनौने आरोप लगाये हैं, जो एकदम झूठे और बेबुनियाद हैं । मीडिया ने पक्षपातपूर्ण तरीके से खबरों को तोड़-मरोड़कर दिखाया है, जिससे साधकों में मीडिया के खिलाफ बहुत आक्रोश है । आपको मालूम है कि भोलानंद, जिसने अनर्गल आरोप लगाया था कि "जम्मू आश्रम में बच्चे गाड़े गये हैं...", उसका भांडाफोड़ हो गया है और उसने पुलिस हिरासत में तथा जाहिर में आकर सभी षड्यंत्रकारियों एवं बिकाऊ मीडियावालों की पोल खोल दी है । क्या आपको जानकारी है ?"

मैंने कहा : "नहीं ।"

फिर वह युवक आत्मविश्वास से बोला : "होगी भी कैसे ? मीडिया ने तो यह खबर लोगों तक आने ही नहीं दी । बापूजी के केस में मीडिया के इसी रुख के कारण लोगों का मीडिया पर से विश्वास उठ गया है ।"

"आपका नाम क्या है ? और कहाँ से हो ? क्या करते हो ?"

"मेरा नाम अंकित दवे है, मुंबई से हूँ । अभी तो नौकरी छोड़ दी है ।"

"नौकरी क्यों छोड़ दी ?"

"जब तक बापूजी बाहर नहीं आ जाते मुंबई नहीं जाऊँगा ।"

मैं सुनकर हैरान रह गयी । आज के इस भौतिकवादी समाज में पढ़ा-लिखा, फर्राटेदार अंग्रेजी बोलनेवाला नवयुवक अंधविश्वासी तो नहीं हो सकता !

हमारी बातें पास में खड़ी एक २०-२२ साल की लड़की सुन रही थी ।

मैंने उससे पूछा : "आप कहाँ से हो ? यहाँ कब से आयी हो ?"

लड़की : "जम्मू से हूँ । मैं तो २०-२५ दिन से ही हूँ यहाँ ।"

बातों-ही-बातों में उसने बताया कि जिस दिन से बापू जेल गये हैं, उसने भोजन छोड़ दिया है, केवल दूध और फल लेती है ।

मैंने पूछा : "भोजन कब करोगी ?"

"जब बापूजी बाहर आयेंगे ।" इतना कहते ही उसकी आँखों में आँसू आ गये ।

मैंने उसे सांत्वना दी और दूसरी ओर रुख किया । यहाँ पर उपस्थित लोगों की अगाध श्रद्धा देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा था और हृदय में कुछ अजीब-सी अनुभूति भी । सभीके चेहरे और बातों में एक सच्चाई थी ।

## आखिर कौन हैं ये ?

बापू की एक झलक पाने के लिए बेताब इस भीड़ में कुछ महिलाएँ एक छोटी-सी किताब पढ़ रही थीं ।

मैंने पास खड़े एक व्यक्ति से पूछा : "ये महिलाएँ क्या पढ़ रही हैं ?"

व्यक्ति बोला : ''श्री आशारामायणजी का पाठ कर रही हैं।''

''इसमें क्या है ?''

''जैसे भगवान श्रीराम की जीवनलीला रामायण है, वैसे ही पूज्य बापूजी की जीवनलीला श्री आशारामायण है।''

कौतूहलवश मैंने भी वह पुस्तिका ले ली। काव्य के रूप में लिखी इस पुस्तिका में आशाराम बापू का जीवन-परिचय और उनके द्वारा की गयी लीलाओं की झलक थी।

बापू के जन्म के बारे में लिखा था : 'इनके जन्मते ही अजनबी सौदागर बड़ा झूला ले आया था। आशाराम बापू के बचपन का नाम आसुमल था। इन्हें बचपन से ही ईश्वरप्राप्ति की लगन थी। विद्यालय में शिक्षक भी उनका आदर करते थे। जब ये बड़े हुए और घरवालों ने उनकी शादी करनी चाही तो घर छोड़कर भाग गये। माँ व भाई ने ढूँढ़कर समाज में अपनी इज्जत का वास्ता देकर शादी करवायी। लेकिन वे धर्मपत्नी को समझा-बुझाकर अपना लक्ष्य ईश्वरप्राप्ति बता के घर छोड़कर चले गये। फिर वे कई गुफाओं, कंदराओं, जंगलों तथा अन्य जगहों में सद्गुरु की खोज में घूमते-घामते एक ब्रह्मज्ञानी संत साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज के चरणों में पहुँचे।'

इतना पढ़कर मन में फिर ठनक हुई कि जिनका जीवन युवावस्था से इतना संयमी व वैराग्यपूर्ण है कि ईश्वरप्राप्ति के लिए शादी के तुरंत बाद ही अपनी पत्नी को छोड़कर चले जाते हैं, क्या वे ७४-७५ वर्ष की आयु में अपनी पोती की उम्र की लड़की के साथ ऐसा व्यवहार कर सकते हैं ! एक बार तो ऐसा सोचना भी मुझे पाप लग रहा था। खैर, जैसे-तैसे मन को इस उधेड़-बुन से सँभालते हुए मैंने आगे की पंक्तियाँ पढ़ीं।

'ईश्वरप्राप्ति की तीव्र तड़प देखकर साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज ने उनको शिष्यरूप में स्वीकार लिया। आसुमल गुरुसेवा में तितिक्षा सहते हुए बड़ी तत्परता से लगे रहे। और आसोज सुद दो दिवस संवत् बीस-इक्कीस को साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज की कृपा से उन्हें आत्मसाक्षात्कार हुआ।

इसके बाद उनके जीवन में कई चमत्कार हुए। सत्संग व भगवन्नाम के प्रताप से उन्होंने कितने ही लोगों के रोग-शोक मिटाये, शराब-मांस आदि छुड़वाये और लोगों को भक्ति-ज्ञान का रंग लगाया... आदि।'

यह पुस्तिका पढ़कर मेरा मन आश्चर्य और असमंजसता के सागर में गोते खाने लगा कि आखिर कौन हैं ये ?

फिर सोचा, 'चलो, कुछ और लोगों से मिला जाय।'

## मेरी उत्सुकता बढ़ती गयी...

एक लम्बी-सी सुंदर युवती पर मेरी निगाहें ठहर गयीं। मैंने उससे पूछा : "आप कहाँ से आयी हो ?"

उसने सहज भाव से उत्तर दिया : "अमेरिका से।" अब चौंकने की बारी मेरी थी; अमेरिका से... !

"क्यों आयी हो ?"

युवती : "बापूजी के दर्शन करने।"

"आप तो बहुत दूर से आयी हो, दर्शन हो गये क्या ?"

"हाँ, कल कोर्ट में तो हुए थे पर बहुत दूर से हुए थे। आज रविवार को जेल के अंदर जाने की अनुमति मिल सकती है, जिससे पास से दर्शन हो सकते हैं।"

"अगर आप अन्यथा न लें तो एक प्रश्न पूछूँ ?"

"हाँ-हाँ, पूछिये।"

"देखो, इतने महीनों से दुनिया के सामने बापूजी के खिलाफ माहौल बना है, कई आरोप लगे फिर भी आपकी इतनी श्रद्धा कि अमेरिका से यहाँ दर्शन के लिए आयी हो, मुझे बड़ा आश्चर्य हो रहा है। ऐसा क्यों ?"

"मैंने तो समझा था कि आपने मंत्रदीक्षा ली हुई है लेकिन आपके इस प्रश्न से मुझे समझ में आ गया कि आपने दीक्षा नहीं ली है। कोई बात नहीं, मैं आपके प्रश्न का जवाब जरूर देना चाहूँगी।" (यह सारा वार्तालाप अंग्रेजी में चल रहा था।)

## लेकिन ये हकीकत है

उस युवती ने बताया कि "मेरा नाम शुची है, मैंने व मेरे पति ने १९९८ में बापूजी से दीक्षा ली थी। हमारा एक बेटा है। जब वह छोटा था तो एक बार ऐसा बीमार पड़ा कि किसी दवाई के रिएक्शन से उसे दोनों आँखों से दिखना बंद हो गया। कई डॉक्टरों से इलाज कराया लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। एक दिन मैंने बेटे को बापूजी के फोटो के सामने लिटा दिया और एक चिट्ठी लिखकर बापूजी द्वारा स्पर्श की हुई चरणपादुका पर रख दी, फिर रातभर हम वहीं बैठे रहे। अचानक सुबह-सुबह, लगभग ४ बजे मेरा बेटा उठा और हमें देखते हुए बोला : "पीले कपड़े में बापूजी आये थे, बापूजी की आँखों से रोशनी निकली और मेरी आँखों में समा गयी, मुझे अब सब दिख रहा है।"

हम तो खुशी से झूम उठे। जहाँ सभी डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था वहाँ बापू ने हमारे बच्चे को नेत्रदान दिया। मुझे लगता है, शायद आपको मेरी बात पर विश्वास नहीं होगा लेकिन यह हकीकत है। तब से लेकर आज तक मैं और मेरे पति साल में २ बार बापूजी के दर्शन करने भारत आते हैं। यहाँ जो भी लोग खड़े हैं या फिर बापू के जितने भी साधक हैं उनके अपने कई अनुभव हैं इसीलिए सबकी बापूजी में अगाध श्रद्धा है।

जैसा आपने कहा कि मीडिया द्वारा इतने दिनों से कई तरह की बातें प्रसारित की जा रही हैं, फिर भी हमारी श्रद्धा में कोई कमी नहीं आयी है तो इसका कारण यही है कि जो बापूजी ने हमें दिया है, उस पर मीडिया का कोई असर नहीं हो

सकता। हमारे अमूल्य आध्यात्मिक और लौकिक अनुभवों के आगे मीडिया की वाहियात बातों की कोई कीमत ही नहीं है। जिनकी प्रेरणा से युवा पीढ़ी संयमी हो रही है, घर-घर 'वेलेंटाइन डे' की जगह 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' मनाया जा रहा है, आप जरा सोचिये ! क्या ऐसे महान संत ऐसा घृणित कार्य कर सकते हैं ? ऐसा सोचना भी पाप है।''

उस युवती की बातें सुनकर मैं अवाक् रह गयी।

## अनोखी गुरुदक्षिणा

अब मेरी नजर उस व्यक्ति पर गयी जो लगातार मुझे ही घूर रहा था। वह व्यक्ति अब मेरे नजदीक आकर बोला : ''पहचाना ?''

''अरे संजय !''

मेरी बहन और संजय ने विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन से साथ-साथ पीएच.डी. की थी।

मैंने पूछा : ''क्या कर रहे हो आजकल और यहाँ कैसे ?''

संजय : ''मैं इंदौर साइंस कॉलेज में प्रोफेसर हूँ और यहाँ बापूजी के दर्शन के लिए आया हूँ।''

''संजय ! मुझे यह जानकर बड़ा आश्चर्य हो रहा है कि तुम भी बापू के दर्शन करने आये हो ! मैं लेखिका हूँ। बहुत दिनों से मीडिया में बापू के बारे में खबरें सुन-सुनकर अनायास ही इच्छा हुई कि मैं भी इनके बारे में कुछ लिखूँ लेकिन मैं सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास नहीं करती हूँ। मीडिया द्वारा इतने कुप्रचार के बाद भी एक बात बार-बार सामने आ रही थी कि आशाराम बापू के भक्तों ने कभी अनशन किया तो कभी रैलियाँ निकालीं, कहीं जेल भरो आंदोलन किया और कइयों ने तो भोजन का ही त्याग कर दिया।

बस, यही जानने के लिए कि आखिर सत्य क्या है ? आखिर कौन हैं ये ? ऐसी कौन-सी सच्चाई है जो लोगों तक नहीं पहुँची है... यही सब जानने के लिए मैं यहाँ आयी हूँ।

अच्छा, तुम तो वैज्ञानिक हो और विज्ञान पढ़े लोग आसानी से किसी बाबा के चक्कर में नहीं आते, तुम कैसे फँस गये ?''

''प्रतिभा ! तुम इस तरह की बात करोगी तो मैं तुम्हारे किसी भी प्रश्न का जवाब नहीं दूँगा।''

''माफ करना संजय ! मेरा मतलब तुम्हें चोट पहुँचाना नहीं था, मैंने मजाक में ऐसा कह दिया। अगर तुम्हें बुरा लगा हो तो मैं अपने शब्द वापस लेती हूँ।''

''बापूजी मेरे गुरु हैं और मेरे पूरे परिवार ने उनसे मंत्रदीक्षा ली है। तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि मैं ड्रग्स लेता था और ड्रग्स का इतना आदी हो गया था कि मैंने कॉलेज जाना भी छोड़ दिया था। मेरी माँ बहुत परेशान हो गयी थी, पिताजी थे नहीं। माँ ने बापूजी से दीक्षा ली हुई थी और एक दिन मुझे बापूजी के दर्शन के लिए बहुत आग्रह करके ले गयी। बापूजी सत्संग में कह रहे थे कि ''मुझे दक्षिणा में अपनी बुराइयाँ दे दो।''

मेरी माँ ने मेरा हाथ पकड़कर ऊपर कर दिया और कहा कि ''बोल, मेरी नशे की आदत ले लो।'' मैंने मजाक में कह दिया : ''मेरी नशे की आदत ले लो।'' तुम्हें विश्वास नहीं होगा उस दिन के बाद से आज तक मैंने कभी ड्रग्स नहीं लीं और बाद में मैंने बापूजी से दीक्षा भी ले ली। मैं आज जो कुछ भी हूँ, बापूजी की वजह से हूँ।''

एक पढ़ा-लिखा कॉलेज का प्रोफेसर, वैज्ञानिक किसीके बहकावे में नहीं आ सकता फिर भी मुझे अपने कई प्रश्नों के जवाब चाहिए थे इसलिए मैंने पूछा : ''संजय ! मैं तुम्हारी बात समझ रही हूँ लेकिन मेरे कुछ प्रश्न हैं, क्या तुम उनका जवाब देना पसंद करोगे ?''

''हाँ-हाँ, पूछो।''

''मीडिया में इतने दिनों से इतना सब कुछ आ रहा है। उसका कुछ तो कारण होगा... ?''

## इतना दुष्प्रचार ! कुछ तो कारण होगा...

"हाँ हैं, इसके एक नहीं बहुत सारे कारण हैं। आशारामजी बापू एक विख्यात आध्यात्मिक संत हैं, जिन्होंने करोड़ों लोगों के मन पर भारतीय संस्कृति के संस्कार डाले हैं, भटके हुए लोगों को सत्य और ईश्वर के मार्ग पर लगाया है। पूज्य बापूजी ने धर्मांतरण का शिकार हो रहे हिन्दुओं को जागृत किया है। यह सब संस्कृति-विरोधी टीवी चैनलों और हिन्दू-विरोधी शासकों को मान्य नहीं था। बापूजी का प्रवचन सुनकर बहुत सारे हिन्दू, जिन्हें प्रलोभन देकर या डरा-धमकाकर धर्मांतरण के लिए विवश किया जा रहा था, वे धर्म के प्रति जागरूक होने लगे थे। परिणाम यह आया कि धर्मांतरण करानेवाली संस्थाओं के मंसूबों पर पानी फिर गया, जिससे ये संस्थाएँ बापूजी के विरुद्ध हो गयीं।

बापूजी के सत्संगी मांसाहार, शराब, फास्टफूड व कोल्डड्रिंक्स जैसी शरीर को हानि पहुँचानेवाली चीजों का त्याग कर देते हैं। इससे कई विदेशी कम्पनियों को नुकसान होने लगा और ये बापूजी की लोकप्रियता खत्म करना चाहती थीं। सौंदर्य-प्रसाधन बनानेवाली बहुत सारी विदेशी कम्पनियों के लिए भारत देश एक बहुत बड़ा बाजार है। लेकिन बापूजी अपने सत्संगों में अनेक बार इन केमिकल प्रसाधनों के नुकसानों के बारे में सचेत कर अनेक देशी और आयुर्वेदिक नुस्खे बताते हैं। इससे इन कम्पनियों को तथा इन कम्पनियों के विज्ञापन से करोड़ों रुपये कमानेवाले मीडिया को भी नुकसान होता है। इसलिए ये भी बापूजी का विरोध करते हैं। बापूजी ने युवाओं को व्यसनमुक्त कर उन्हें संयम व सादगी का मार्ग दिखाया है। बापूजी से दीक्षा ले के 'विद्यार्थी तेजस्वी तालीम शिविरों' में भाग लेने से भारत की बाल एवं युवा पीढ़ी बहुत संयमी, तेजस्वी, निडर और बुद्धिमान हो रही है। बापूजी के द्वारा पूरे विश्व में बच्चों में नैतिक शिक्षा के लिए हजारों 'बाल संस्कार केन्द्र' निःशुल्क चलवाये जा रहे हैं, ताकि उनमें हमारी संस्कृति के मूल्यों का संवर्धन हो। भारतीय युवावर्ग को बापूजी बार-बार 'भारत को विश्वगुरु बनाने' का नारा देकर उत्साहित कर रहे हैं। इसलिए भारत देश की विरोधी शक्तियाँ बापूजी को अपना दुश्मन मानती हैं..."

## है जवाब आपके पास ?

संजय लगातार बोलता जा रहा था। उसका चेहरा लाल हो गया था। उसके चेहरे पर दुःख और क्रोध का मिला-जुला भाव स्पष्ट दिख रहा था।

"प्रतिभा ! मैं यही कहना चाहता हूँ कि मीडिया दोनों पक्षों को क्यों नहीं दिखाता है ? आज चौदह महीने से लगातार बापू के खिलाफ मीडिया ने मोर्चा सँभाला हुआ है इसलिए मैं तुमसे कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूँ।

एक लड़की जो उत्तर प्रदेश की रहनेवाली है, छिंदवाड़ा (म.प्र.) में पढ़ रही थी, तथाकथित घटना बताती है जोधपुर की और एफआईआर पाँच दिन बाद दिल्ली जा के रात को २.३० बजे लिखवाती है, ऐसा क्यों ? इसे मीडिया ने क्यों नहीं दिखाया ?

लड़की की मेडिकल रिपोर्ट में रेप या यौन-शोषण की पुष्टि नहीं हुई फिर चैनलों ने झूठी अफवाहें क्यों फैलायीं कि बलात्कार हुआ है ?

साधक शिवाभाई के पास से अश्लील सीडी बरामद होने का झूठा प्रचार क्यों किया गया ? अमृत प्रजापति, महेन्द्र चावला, राहुल सचान, अजय, हरेन्द्र, राजू लम्बू आदि कौन हैं ? इनके चरित्र और अतीत के बारे में जनता को क्यों नहीं बताया जा रहा है। अमृत प्रजापति, महेन्द्र चावला, राहुल सचान के ऊपर तो पहले से ही केस चल रहे हैं तो ऐसे चरित्रभ्रष्ट लोगों द्वारा लगाये गये आरोपों को सच बताकर मीडिया उनका समर्थन क्यों कर रहा है ?

जिस भोलानंद के झूठे आरोपों को मीडिया

सारे दिन दिखाता था, वही भोलानंद जब स्वीकार करता है कि उसे बापूजी पर झूठे आरोप लगाने के लिए षड्यंत्रकारियों व कुछ मीडिया चैनलों द्वारा मालामाल करने का लालच दिया गया था तो इस खुलासे को मीडिया ने क्यों नहीं दिखाया ?''

मैं असमंजसता में खड़ी सुन रही थी, मेरे पास कोई जवाब नहीं था लेकिन संजय मेरे जवाब का इंतजार नहीं कर रहा था, उसके सवाल खत्म ही नहीं हो रहे थे।

वह फिर बोलने लगा : ''वेलेंटाइन डे को 'मातृ-पितृ पूजन दिवस' के रूप में बदलकर क्या बापूजी ने कोई अपराध किया है ?

होली, दिवाली आदि हिन्दू त्यौहारों को वैदिक रीति से मनाने का कार्य क्या गलत है ?

हजारों गायों को कटने से बचाकर संत श्री आशारामजी के आश्रम में उनको पाला जाता है,

गरीबों के लिए भोजन, वस्त्र आदि का वितरण किया जाता है, 'भजन करो, भोजन करो, पैसा पाओ' कार्यक्रम चलवाकर लाखों गरीबों का कल्याण किया जाता है। क्या किसीको जीवनदान देना गुनाह है ?

गर्मियों में शरबत, छाछ व टोपी वितरण तथा सर्दियों में जरूरतमंदों में खजूर, कम्बल और ऊनी वस्त्रों, गर्म भोजन के डिब्बों का वितरण करना क्या पाप है ?

देश में जब-जब बाढ़, भूकम्प, सुनामी आदि प्राकृतिक आपदाएँ आयीं तो हजारों बेघर लोगों के लिए बापूजी ने मकान बनवाये, कपड़े, बर्तन आदि की व्यवस्था की। जहाँ प्रशासन भी नहीं पहुँचा वहाँ बापूजी द्वारा हजारों गरीब लोगों की सेवा करवायी गयी। क्या यह गुनाह है ?

उत्तराखंड बाढ़ राहत सेवा

ओड़िशा बाढ़ राहत सेवा

पूज्य बापूजी के सत्संग से मेरे जैसे असंख्य लोग जो व्यसनों में डूबकर तबाह हो चुके थे, उनके जीवन से ड्रग्स, शराब, तम्बाकू, सिगरेट, बीड़ी आदि सदा के

लिए अलविदा हो गये और वे कुत्ते की मौत मरने से बच गये। क्या यह उनकी गलती है ?

अगर मीडिया इतना ही देश का भला चाहता है और सच दिखाता है तो उनके सेवाकार्यों को मीडिया ने आज तक कभी क्यों नहीं दिखाया ?

इस बारे में कभी कोई रिपोर्ट क्यों नहीं बनायी जाती है कि संत आशारामजी बापू की महिला शिष्यों की संख्या करोड़ों में है ? उनका अनुभव क्यों नहीं दिखाया जाता है ? पूरे भारत में बापूजी ने 'युवाधन सुरक्षा अभियान' चलाकर स्कूलों और कॉलेजों के विद्यार्थियों को ब्रह्मचर्य और संयम का महत्त्व सिखाया, संयम पर

आधारित 'दिव्य प्रेरणा-प्रकाश' पुस्तक करोड़ों की संख्या में देश-विदेश में बाँटी गयी, क्या इस बात का प्रचार नहीं किया जाना चाहिए था ?

इसलिए हम सभी बहुत व्यथित हैं कि बापूजी को बिल्कुल झूठे, मनगढ़ंत आरोपों में फँसाकर जेल में रखा गया है। भारत की संस्कृति को बदनाम करने के लिए देश के प्रमुख संतों को साजिश का शिकार बनाया जा रहा है। बापूजी ने लोगों को सत्संग ही नहीं, कर्मयोग के सुसंस्कारों के साथ एक नयी दिशा, एक नयी पहचान देकर भारत के कदम विश्वगुरु पद की ओर बढ़ाये हैं।

प्रतिभा ! तुम और हम ४-५ व्यक्ति भी जोड़कर रख सकें तो बड़ी बात है, यहाँ तो करोड़ों लोग बापूजी के भक्त हैं और उन करोड़ों लोगों में से एक-एक के अनेकों अनुभव हैं। और इतने वर्षों से बापूजी के सान्निध्य में लोग अपने को उन्नत महसूस करते हैं, आनंदित महसूस करते हैं। लोगों को अब मीडिया या किसीके भी कुछ कहने का कोई असर नहीं हो सकता।

शंकराचार्य जयेन्द्र सरस्वतीजी, साध्वी प्रज्ञा सिंह, स्वामी केशवानंदजी, नित्यानंदजी जैसे हिन्दू संतों को बदनाम कर धर्म को नष्ट करने का षड्यंत्र वर्षों से चला आ रहा है, मगर अब परिणाम सबके सामने आ ही गया न ! सारे संत एकदम पाक-साफ साबित हो गये। और आज परम पूज्य बापूजी के साथ फिर से वही इतिहास दोहराया जा रहा है। मगर अफसोस है कि इतने पर भी भारत की जनता की आँखें नहीं खुल रही हैं, वह देशद्रोहियों के प्रति सावधान नहीं हो रही है। धर्मद्रोहियों को इतना जरूर याद रखना चाहिए कि संतों व संस्कृति के विरुद्ध दुष्प्रयत्न करना स्वयं को बरबाद करना है ! हमारे बापूजी हमारे गुरु हैं, हमारे भगवान हैं और **मुझे गर्व है कि मैं संत श्री आशारामजी बापू का शिष्य हूँ।''**

मैं संजय का विश्वास देखकर दंग रह गयी। संजय कुछ देर चुप रहा और फिर कुछ सोचकर पुनः बोला : ''प्रतिभा ! मैं तुमसे निवेदन करता हूँ कि तुम अपनी किताब में मेरी ये बातें जरूर लिखना।''

''जरूर, मैंने जो तुमसे प्रश्न किये और उसके मुझे जो उत्तर मिले वे तुम मेरी किताब में जरूर पाओगे।''

मैंने वहाँ उपस्थित लोगों की श्रद्धा-भक्ति को मन-ही-मन नमन किया और वापस अपने गंतव्य की ओर चल पड़ी। ट्रेन में मेरे मन में विचार आया कि जब मैंने यह जेल-यात्रा शुरू की तो मैं एक गहरे असमंजस में थी कि आखिर कौन हैं संत आशारामजी बापू ? जैसा मीडिया दिखाता है वैसे या जैसे इनके करोड़ों भक्त इन्हें मानते हैं वैसे अवतारी संत-महापुरुष ! इस यात्रा के बाद मुझे मेरे प्रश्नों का जवाब मिल गया। ❐

संत सताये तीनों जायें...

# दीपक चौरसिया पर मँडरा रहे हैं गिरफ्तारी के बादल

पूज्य बापूजी की छवि धूमिल कर जनमत को उनके खिलाफ करने तथा प्रशासन व न्यायपालिका में नकारात्मक पूर्वाग्रह बनाने के बदइरादे से १२ दिसम्बर २०१३ को 'इंडिया न्यूज' चैनल के दीपक चौरसिया ने गुड़गाँव (हरियाणा) के एक परिवार के निजी पारिवारिक विडियो से छेड़छाड़ की एवं उसे तोड़-मरोड़कर अश्लील बनाया और उसमें दिखनेवाली १० वर्षीया मासूम बच्ची और पूज्य बापूजी के लिए अश्लील भाषा का प्रयोग कर उस विडियो को कई बार प्रसारित किया। टीआरपी के भूखे दीपक चौरसिया ने बच्ची के पास खड़े उसके ताऊ को छुपा दिया एवं उसकी ताई को शिल्पी (छिंदवाड़ा गुरुकुल के बालिका छात्रावास की अधीक्षक) बताया, ताकि बापूजी और गुरुकुल को बदनाम किया जा सके। इससे उस छोटी बच्ची एवं उसके परिवार को बहुत मानसिक पीड़ा सहनी पड़ी एवं उनका सामाजिक जीवन अस्त-व्यस्त हो गया था।

बालिका के घरवालों ने कई दिनों तक पुलिस थाने के चक्कर काटे पर उनकी आवाज किसीने नहीं सुनी। इस अन्याय के विरोध में जब कुछ समाजसेवी संस्थाओं ने धरना-प्रदर्शन आदि किया, तब जा के दीपक चौरसिया और इंडिया न्यूज के अन्य अधिकारियों तथा 'न्यूज नेशन' व 'न्यूज २४' चैनल के खिलाफ बड़ी मुश्किल से जीरो एफआईआर दर्ज हुई। परंतु धनबल व सत्ताबल का दुरुपयोग कर चौरसिया ने एड़ी-चोटी का जोर लगाया और पुलिस कार्यवाही नहीं होने दी। फिर चौरसिया ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय से १८ अप्रैल को अरेस्ट स्टे लेकर जीरो एफआईआर खारिज करने की अर्जी भी लगायी। अर्जी पर सुनवायी करते हुए न्यायालय ने कहा कि "प्रथम-द्रष्ट्या संज्ञानयोग्य आपराधिक मामला बनता है। अतः यह अर्जी अस्वीकार की जाती है।" साथ ही न्यायालय ने चौरसिया के अरेस्ट स्टे को रद्द कर दिया।

पॉक्सो जैसी गम्भीर धाराओं के बावजूद हरियाणा व उत्तर प्रदेश पुलिस ने कोई कार्यवाही नहीं की। इतने बड़े बिकाऊ चैनलों के खिलाफ सत्य की लड़ाई लड़ रहे इस परिवार ने सर्वोच्च न्यायालय में इन पर पुलिस कार्यवाही की माँग को लेकर अर्जी लगायी थी, जिस पर १७ फरवरी २०१४ को माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश की पुलिस को जवाब देने का नोटिस दिया था। परंतु इसे कोई महत्त्व न देते हुए पुलिस ८ महीने तक टालती रही। अंत में ८ अक्टूबर को सर्वोच्च न्यायालय ने पुलिस को ७ दिन में जवाब देने का आदेश दिया।

अब पूरे देश की नजर पुलिस पर टिकी है कि वह कब शीर्ष न्यायालयों का सम्मान करते हुए दीपक चौरसिया को गिरफ्तार एवं अन्य चैनलों के खिलाफ कुछ कार्यवाही करती है ?

## दीपक चौरसिया के खिलाफ ५ एफआईआर व ७० से भी ज्यादा शिकायतें दर्ज

झूठी खबरें एवं बनावटी कहानियाँ बना के पूज्य बापूजी एवं आश्रम के बारे में दुष्प्रचार करनेवाले तथा mediacrooks.com द्वारा 'भारत का सबसे खराब पत्रकार २०१४' की उपाधि से विभूषित दीपक चौरसिया व 'इंडिया न्यूज' चैनल के खिलाफ देश के (शेष पृष्ठ १५ पर)

## सभी शिष्य रक्षा पाते हैं सूक्ष्म शरीर गुरु आते हैं

एक दिन शाम को हमारे पड़ोसी ने जोर से आवाज दी : ''अंजलि छत से गिर गयी है !'' घर के लोग दौड़कर पहुँचे और उसे बेहोश हालत में देखकर घबरा गये। मेरी भतीजी अंजलि (उम्र १४) दूसरी मंजिल की छत से मुँह के बल गिरी थी। किसीको कुछ सूझ नहीं रहा था। बच्ची को उसके पिता अस्पताल ले गये। मैं पूजाघर में गया और बापूजी से प्रार्थना करने लगा। मेरी भाभी श्री आशारामायणजी का पाठ करने लगीं।

प्रार्थना करके जब मैं अस्पताल पहुँचा तो देखा कि इलाज शुरू होने से पहले ही अंजलि थोड़ा होश में आ गयी है। वह बार-बार 'बापूजी ! बापूजी !...' कह रही थी। जब पूरी तरह होश में आयी तो उसने बताया कि ''बापूजी आये थे, उन्होंने ही मुझे बचाया है।'' इतनी ऊँचाई से गिरने के बाद भी अंजलि को मामूली-सी चोट आयी है, यह देखकर सभी लोग हैरान रह गये ! अभी वह एकदम ठीक है। आज अगर मेरी भतीजी जीवित है तो बापूजी की कृपा से। ऐसे मेरे शिवस्वरूप गुरुदेव का जितना आभार मानूँ उतना कम है।

– राजू बाघमार, रायपुर (छ.ग.), मो. : ९४०७९९०४९९

## मध्य प्रदेश शासन ने किया गुरुकुल के विद्यार्थियों को सम्मानित

संत श्री आशारामजी गुरुकुल, छिंदवाड़ा की महिमा तोमर एवं उमेश कुमार ने १२वीं बोर्ड परीक्षा में क्रमशः ८९ एवं ८७ प्रतिशत अंक प्राप्त किये थे। इनकी इस उपलब्धि पर मध्य प्रदेश शासन द्वारा इन्हें लेपटॉप खरीदने के लिए २५-२५ हजार रुपये तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये। गुरुकुल के ध्येय वाक्य **'उत्तम शिक्षा, उत्तम संस्कार'** को चरितार्थ करनेवाले इन विद्यार्थियों को बहुत-बहुत बधाइयाँ !

## इन पुण्यदायी तिथियों का लाभ लेना न भूलें...

**२ से ६ नवम्बर :** भीष्मपंचक व्रत

**३ नवम्बर :** देवउठी-प्रबोधिनी एकादशी (इस दिन किया गया जप, होम, दान सब अक्षय होता है। ब्रह्महत्या आदि महापाप भी रात्रि-जागरण से नष्ट हो जाते हैं। यह व्रत करनेवाला धनवान, योगी, तपस्वी तथा इन्द्रियों को जीतनेवाला होता है। इस दिन गुरु का पूजन करने से भगवान प्रसन्न होते हैं। - पद्म पुराण) (इस दिन भगवान विष्णु की कपूर से आरती करने पर अकाल मृत्यु नहीं होती।)

**६ नवम्बर :** देव दिवाली, त्रिपुरारी पूर्णिमा (इस दिन शिवजी की प्रसन्नता के लिए शाम के समय दीपदान अवश्य करना चाहिए। इससे जन्म-मरण के चक्कर से छूटने की मति और मन बन जाता है।)

**१३ नवम्बर :** गुरुपुष्यामृत योग (सूर्योदय से रात्रि ९-४२) **१६ नवम्बर :** विष्णुपदी संक्रांति (दोप. १२-२३ से सूर्यास्त)

**१८ नवम्बर :** उत्पत्ति एकादशी (धन, धर्म और मोक्ष की प्राप्ति करानेवाला तथा महापापनाशक व्रत)

**२५ नवम्बर :** मंगलवारी चतुर्थी (दोपहर १-१७ से २६ नवम्बर सूर्योदय तक)

**२ दिसम्बर :** मोक्षदा एकादशी, गीता जयंती

## आरोप लगानेवाली लड़की निकली बालिग

संत श्री आशारामजी बापू पर आरोप लगानेवाली लड़की के बालिग होने का प्रमाण शाहजहाँपुर (उ.प्र.) के श्री शंकर मुमुक्षु विद्यापीठ से प्राप्त हुए थे । विद्यापीठ के प्राचार्य द्वारा पुलिस को दिये गये पत्र में लड़की की जन्मतिथि ६ अगस्त १९९५ है। इसके अनुसार तथाकथित आरोप के अंतर्गत कहे गये दिन लड़की बालिग थी । जोधपुर पुलिस ने शाहजहाँपुर पहुँचकर प्रमाणपत्रों की जाँच की, जिसके अनुसार लड़की की उम्र ज्यादा निकली फिर भी आज तक पॉक्सो धारा क्यों नहीं हटायी गयी यह एक अहम सवाल है। ('दैनिक जागरण' व 'हिन्दुस्तान' समाचार पत्रों के आधार पर)

वरिष्ठ न्यायविद् श्री राम जेठमलानी एवं सुब्रमण्यम स्वामी ने तो पहले ही कहा है कि केस झूठा है, बोगस है।

## लड़की के शरीर पर नहीं थे कोई खरोंच के निशान : चिकित्सक

**दैनिक भास्कर, राजस्थान पत्रिका । जोधपुर सत्र न्यायालय में संत आशारामजी बापू पर** आरोप लगानेवाली लड़की का मेडिकल करनेवाली दिल्ली के लोकनायक अस्पताल की गायनेकोलॉजिस्ट डॉ. शैलजा वर्मा के बयान दर्ज हुए। बयान में उन्होंने कहा कि "मेडिकल के दौरान लड़की के शरीर पर कोई खरोंच के निशान नहीं थे और न ही प्रतिरोध के कोई निशान थे। लड़की का हाईमन इनटैक्ट (ज्यों-का-त्यों) पाया गया था।"

(डॉ. शैलजा के बयान से स्पष्ट है कि एफआईआर में लिखवाये गये अनर्गल आरोप मनगढ़ंत हैं। लड़की के साथ वैसा कुछ हुआ ही नहीं था। एक सुनियोजित षड्यंत्र के तहत पूज्य बापूजी को फँसाया गया है।)

(पृष्ठ १३ का शेष)

विभिन्न स्थानों पर न्यायिक दंडाधिकारी के समक्ष ७० से भी ज्यादा शिकायतें की जा चुकी हैं।

**सीतामढ़ी (बिहार) व दार्जिलिंग (प.बंगाल)** में एफआईआर दर्ज होने के बाद अब **मुजफ्फरपुर (बिहार)** में भा.दं.वि. की धारा ११४, १५३, १५३(ए) (अलग-अलग वर्गों के बीच में दुश्मनी को प्रोत्साहित करना), १९३ (न्यायिक प्रक्रिया में या अन्य प्रसंग में झूठे सबूत देना), २९५(ए), २९८ (धार्मिक भावनाएँ आहत करने के इरादे से बोलना), ५०० (मानहानि करना), ५०४, ५०५ (सार्वजनिक दंगे हों ऐसी झूठी अफवाह फैलाना), १२०(बी) (गैर-कानूनी काम करने की आपराधिक साजिश रचना) तथा आईटी एक्ट ६६(ए) (प्रचार माध्यमों द्वारा आक्रामक संदेश देना), ६७ (इलेक्ट्रॉनिक माध्यम द्वारा आपत्तिजनक सामग्री प्रचारित करना) के अंतर्गत एफआईआर दर्ज हुई है। ऐसी ही दो एफआईआर **नवादा** और **दानापुर (बिहार)** में भी दीपक चौरसिया और इंडिया न्यूज के खिलाफ दर्ज हुई हैं। इस प्रकार देशभर में जागरूक जनता अपने व समाज के साथ हो रहे अन्याय के खिलाफ आवाज उठाकर कानूनी तरीके से अपने अधिकारों की सुरक्षा की माँग कर रही है। - श्री आर.एन. ठाकुर ❐

❋ तिल या सरसों के तेल से मालिश करने से तथा रात को दूध में १ चम्मच शहद डालकर पीने से शरीर सशक्त व सुडौल बनता है।

❋ रात को सोने से १ घंटा पहले ३ छुहारे दूध में अच्छी तरह उबालकर चबा-चबा के खायें और ऊपर से मिश्रीयुक्त दूध पियें। यह प्रयोग शीतकाल में २-३ माह तक करने से शरीर पुष्ट व मजबूत बनता है।

### प्रसन्न मन एवं प्रखर बुद्धि के लिए

अश्वगंधा, ब्राह्मी, शंखपुष्पी तथा शतावरी को अलग-अलग कूटकर कपड़े से छान के चूर्ण बना लें। इनके समभाग मिश्रण में उतनी ही मिश्री मिलाकर रख लें। रोज रात्रि को भोजन के २ घंटे बाद व सोने से १ घंटा पूर्व १ चम्मच चूर्ण हलके गुनगुने दूध में मिलाकर पियें। इससे दिनभर की थकावट, मानसिक शिथिलता व निर्बलता दूर होगी और नींद भी अच्छी आयेगी। सुबह उठने पर शरीर में ताजगी-चुस्ती-स्फूर्ति तथा मन में उमंग का एहसास होगा। याददाश्त का विकास होगा। पढ़े हुए को याद रखने में मदद मिलेगी। यह प्रयोग दिमागी काम करनेवालों, विद्यार्थियों, युवाओं, प्रौढ़, वृद्ध स्त्री-पुरुषों एवं गर्भवती महिलाओं - सभीके लिए लाभदायक है। फिर देर क्यों करना ? ❐

## संत च्यवनप्राश (केसर)

यह वीर्यवान आँवले, प्रवालपिष्टी, शुद्ध घी, शतावरी, केसर, रजत भस्म, बंग भस्म, अभ्रक भस्म और लौह भस्म आदि ५६ जड़ी-बूटियों के अलावा हिमालय से लायी गयी वज्रबला डालकर विधिपूर्वक बनाया गया है। यह उत्तम आयुर्वेदिक औषधि तथा दिव्य रसायन है। इससे बुद्धि कुशाग्र और शरीर बलवान बनता है। इसे स्वस्थ या रोगी, बालक, युवक व वृद्ध सभी लोग हर ऋतु में ले सकते हैं।

**लाभ :** पुरानी खाँसी, रोगजनित दुर्बलता, क्षयरोग, फेफड़ों और मूत्राशय के रोग, संभोग से क्षीणता तथा हृदयरोगों में विशेष लाभकारी है। स्मरणशक्ति व बुद्धि वर्धक तथा कांति, वर्ण और प्रसन्नता देनेवाला है। श्वास, वात व पित्त रोग, शुक्रदोष, मूत्ररोग आदि दूर करता है। बुढ़ापे को दूर रखता है तथा भूख बढ़ाता है। **सेवन विधि -** एक से दो चम्मच दूध या नाश्ते से पहले लें।

## सौभाग्य शुंठी पाक

केसर, सोंठ, गाय का घी, गाय का दूध, ब्राह्मी, शतावरी, अश्वगंधा, सफेद मूसली, लौहभस्म, शिलाजीत, छुहारा, किशमिश, विदारीकंद, जायफल आदि बहुमूल्य जड़ी-बूटियों से निर्मित। शास्त्रों में वर्णित अति प्राचीन विधि से बनाया गया एक ऐसा दैवी, स्वास्थ्यवर्धक औषधीय पाक, जिसकी महिमा शिवजी ने पार्वतीजी को सुनायी थी। इसके सेवन से ८० प्रकार के वातरोग, ४० प्रकार के पित्तरोग, २० प्रकार के कफरोग, ८ प्रकार के ज्वर, १८ प्रकार के मूत्ररोग तथा नाक, कान, मुख, नेत्र व मस्तिष्क के रोग तथा बस्तिशूल व योनिशूल समूल नष्ट हो जाते हैं।

## होमियो तुलसी गोलियाँ

आज की दौड़-धूपभरी जिंदगी जीनेवालों के पास इतना समय कहाँ है कि वे शास्त्रों में वर्णित विधि-विधान से तुलसी का सेवन कर सकें। इस बात को ध्यान में रखते हुए आश्रम के पवित्र वातावरण में उपजी सर्वरोगहारी तुलसी से होमियोपैथिक चिकित्सा पद्धति द्वारा ये छोटी-छोटी मीठी गोलियाँ बनायी गयी हैं। इनके नियमित सेवन से स्मरणशक्ति व ⟶

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर ! सभी साधक एवं सेवाधारी दीपावली से उत्तरायण २०१५ तक 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं :

**(१) रुद्राक्ष मनका :** 'लोक कल्याण सेतु' के कम-से-कम २५ सदस्य बनाने पर (जिनमें १ आजीवन सदस्य होना जरूरी है) अथवा ४० प्रतियाँ हर माह मँगवाने पर।

**(२) रुद्राक्ष करमाला (२७ मनकेवाली) :** १०० सदस्य बनाने पर (जिनमें ४ आजीवन सदस्य होने जरूरी हैं) अथवा १५० प्रतियाँ हर माह मँगवाने पर।

**(३) रुद्राक्ष माला (१०८ मनकेवाली) :** ३०० सदस्य बनाने पर (जिनमें हर एक रसीद बुक में १ आजीवन सदस्य होना जरूरी है) अथवा ४०० पत्रिकाएँ हर माह मँगवाने पर।

*'लोक कल्याण सेतु' से संबंधित किसी भी प्रकार की समस्या के लिए सम्पर्क करें :* (०७९) ३९८७७७३९

## सभी समितियों के लिए विशेष खबर

आश्रम की वेबसाइट पर अखिल भारतीय श्री योग वेदांत सेवा समिति, अहमदाबाद द्वारा समितियों के लिए www.ashram.org/samiti विभाग शुरू किया गया है, जिससे आप आगामी सेवाकार्यों से संबंधित मार्गदर्शिका, फ्लैक्स आदि प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आपके यहाँ आयोजित होनेवाले आगामी सेवाकार्य - जैसे वक्ताओं के सत्संग, सम्मेलन, संकीर्तन यात्राएँ आदि की जानकारी तथा आयोजन के बाद तस्वीरें, प्रेस-कवरेज आदि आश्रम की वेबसाइट पर डालने हेतु उन्हें sewa@ashram.org पर अवश्य ई-मेल करें। समितियों की अन्य रिपोर्ट, समस्याएँ आदि भेजने हेतु samiti@ashram.org पर ई-मेल करें।

→ पाचनशक्ति में वृद्धि होती है। यह हृदयरोग, दमा, टी.बी., विष-विकार, ऋतु-परिवर्तनजन्य सर्दी-जुकाम, श्वास-खाँसी, त्वचासंबंधी रोग, सिरदर्द, संधिवात, डायबिटीज, यौन-दुर्बलता, कृमि रोग एवं गले के रोगों में लाभदायी है। हृदय, लीवर, आमाशय हेतु बलवर्धक है। इससे मोटे व्यक्ति का वजन घटता है एवं दुबले-पतले व्यक्ति का वजन बढ़ता है। यह हर आयुवर्ग के रोगी तथा निरोगी, सभीके लिए लाभदायी है। ❐

# झूठे आरोपों से सावधान !

इस संसार में सज्जनों, सत्पुरुषों और संतों को जितना सहन करना पड़ा है उतना दुष्टों को नहीं। ऐसा मालूम होता है कि इस संसार ने सत्य और सत्त्व को संघर्ष में लाने का मानो ठेका ले रखा है। यदि ऐसा न होता तो गांधीजी को गोलियाँ नहीं खानी पड़तीं, दयानंदजी को जहर न दिया जाता और लिंकन व केनेडी की हत्या न होती। निंदा करनेवाला व्यक्ति किसी दूसरे का बुरा करने के प्रयत्न के साथ विकृत मजा लेने का प्रयत्न करता है। इससे बोलनेवाले के साथ सुननेवाले का भी सत्यानाश होता है।

निंदा करनेवाले की तरह सुननेवाले में भी जलन पैदा करती है। सुननेवाले की भी शांति, सूझबूझ और पुण्य नष्ट कर देती है। यह दुनिया का दस्तूर ही है कि जब-जब भी संसार में व्याप्त अंधकार को मिटाने के लिए कोई दीपक अपने आपको जलाकर प्रकाश देता है, दुनिया की सारी आँधियाँ, सारे तूफान उस प्रकाश को बुझाने के लिए दौड़ पड़ते हैं निंदा, अफवाह और अनर्गल कुप्रचार की हवा को साथ लेकर।

समाज जब किसी ज्ञानी संतपुरुष की शरण, सहारा लेने लगता है तब राष्ट्र, धर्म व संस्कृति को नष्ट करने के कुत्सित कार्यों में संलग्न असामाजिक तत्त्वों को अपने षड्यंत्रों का भंडाफोड़ हो जाने का एवं अपना अस्तित्व खतरे में पड़ने का भय होने लगता है। परिणामस्वरूप अपने कर्मों पर पर्दा डालने के लिए वे उस दीये को ही बुझाने के लिए नफरत, निंदा, कुप्रचार, असत्य, अमर्यादित व अनर्गल आक्षेपों व टीका-टिप्पणियों की आँधियों को अपने दिलो-दिमाग में लेकर लग जाते हैं, जो समाज में व्याप्त अज्ञानांधकार को नष्ट करने के लिए महापुरुषों द्वारा प्रज्वलित हुआ था।

ये असामाजिक तत्त्व अपने विभिन्न षड्यंत्रों द्वारा संतों व महापुरुषों के भक्तों व सेवकों को भी गुमराह करने की कुचेष्टा करते हैं। समझदार साधक या भक्त तो उनके षड्यंत्रजाल में नहीं फँसते, महापुरुषों के दिव्य जीवन के प्रतिपल से परिलक्षित उनके सच्चे अनुयायी कभी भटकते नहीं, पथ से विचलित होते नहीं अपितु और अधिक श्रद्धायुक्त हो उनके दैवी कार्यों में अत्यधिक सक्रिय व गतिशील होकर सद्भागी हो जाते हैं लेकिन जिन्होंने साधना के पथ पर अभी-अभी कदम रखे हैं ऐसे कुछ नवपथिक गुमराह हो जाते हैं और इसके साथ ही आरम्भ हो जाता है नैतिक पतन का दौर, जो संतविरोधियों की शांति और पुण्यों को समूल नष्ट कर देता है।

इन्सान भी बड़ा ही अजीब किस्म का व्यापारी है। जब चीज हाथ से निकल जाती है तब वह उसकी कीमत पहचानता है। जब महापुरुष शरीर छोड़कर चले जाते हैं, तब उनकी महानता का पता लगने पर वह पछताते हुए रोते रह जाता है और उनके चित्रों का आदर करने लगता है। लेकिन उनके जीवित सान्निध्य में उनका सत्संग-ज्ञान पचाया होता तो बात ही कुछ और होती। **अब पछताये होत क्या...** ❐

**समत्वं योग उच्यते।** हमारे चित्त में राग न हो, द्वेष न हो और मोह न हो तो हमारे कर्म समत्व योग हो जायेंगे। श्रीकृष्ण, श्रीरामजी, राजा जनक, मेरे लीलाशाह प्रभु, और भी ब्रह्मज्ञानी महापुरुषों के कर्म समत्व योग हो जाते हैं। सबके लिए अहोभाववाले, सुखद, शांतिदायी व उन्नतिकारक हो जाते हैं। ज्ञानी महापुरुष के कर्म सबका मंगल करनेवाले हो जाते हैं। ऐसा ज्ञान-प्रकाश आपके भी जीवन में कब आयेगा ? जब आप राग-द्वेष और मोह रहित कर्म करोगे। ईश्वर सबमें है, अतः सबका मंगल, सबका भला चाहो। - पूज्य बापूजी

# आप कहते हैं...

"मेरा ऐसा सौभाग्य रहा है कि जीवन में जब कोई नहीं जानता था, उस समय से बापूजी के आशीर्वाद मुझे मिलते रहे हैं, स्नेह मिलता रहा है। पूज्य बापूजी ! आप देश और दुनिया - सर्वत्र ऋषि-परम्परा की संस्कार-धरोहर को पहुँचाने के लिए अथक तपश्चर्या कर रहे हैं। अनेक युगों से चलते आये मानव-कल्याण के इस तपश्चर्या-यज्ञ में आप अपने पल-पल की आहुति देते रहे हैं। उसमें से जो संस्कार की दिव्य ज्योति प्रकट हुई है, उसके प्रकाश में मैं और जनता - सब चलते रहें।"

**- श्री नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री**

कुछ साल पहले बापूजी ने श्री नरेन्द्र मोदी को शुभाशीष प्रदान करते हुए कहा था कि "हम आपको देश के प्रधानमंत्री के रूप में देखना चाहते हैं।" बापूजी के संकल्प में करोड़ों साधकों-भक्तों का संकल्प भी जुड़ गया और आज वह साकार हो चुका है।

"पूज्य बापूजी सारे देश में भ्रमण करके जागरण का शंखनाद कर रहे हैं, संस्कार दे रहे हैं। उनके आशीर्वाद से प्रेरणा पाकर बल प्राप्त करके हम कर्तव्य के पथ पर निरंतर चलते हुए परम वैभव (आत्मसाक्षात्कार) को प्राप्त करें, यही प्रभु से प्रार्थना है।"

**- श्री अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्व प्रधानमंत्री**

"हमारे सबके आस्था व विश्वास के केन्द्र परम पूज्य बापूजी के देशभर में तथा दुनिया के दूसरे देशों में जो प्रवचन चलते हैं, उनके द्वारा अध्यात्म की प्रेरणा हम सबको मिलती रहती है। मैं पुनः उनके चरणों में शीश झुकाकर उन्हें हृदय की गहराइयों से प्रणाम करता हूँ।"

**- श्री राजनाथ सिंह, केन्द्रीय गृहमंत्री**

"महाराज पूज्य बापूजी ! आपका आशीर्वाद बना रहे क्योंकि मैं राज करने नहीं आयी, धर्म और कर्म को एक साथ जोड़कर मैं सेवा करने के लिए आयी हूँ और वह मैं करती रहूँगी। आप रास्ता बताते रहो और इस राज्यरूपी परिवार की सेवा करने की शक्ति देते रहो।"

**- श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया, मुख्यमंत्री, राजस्थान**

"श्रद्धेय पूज्य बापूजी ने मुझे आशीर्वाद दिया है। उनके आशीर्वाद से मुझे समाज में अच्छा कार्य करने की प्रेरणा मिलेगी। करोड़ों लोगों को जीवन जीने का मार्ग आपके विचारों से मिलता है। संस्कार और शिक्षा के माध्यम से आपने यह जो लोक-प्रबोधन किया है, इससे हमारे देश में और समाज में अच्छे नागरिक तैयार होंगे जो देश और समाज का गौरव बढ़ाते जायेंगे।"

**- श्री नितिन गडकरी,**
**केन्द्रीय सड़क परिवहन, राजमार्ग एवं जहाजरानी मंत्री**

"बापूजी कितने प्रेमदाता हैं कि कोई भी व्यक्ति समाज में दुःखी न रहे इसलिए सतत प्रयत्न करते रहते हैं। जीवन की सच्ची शिक्षा तो हम भी नहीं दे पा रहे हैं, ऐसी शिक्षा तो पूज्य संत श्री आशारामजी बापू जैसे संतशिरोमणि ही दे सकते हैं।"

**- श्रीमती आनंदीबहन पटेल**
**तत्कालीन शिक्षामंत्री, वर्तमान मुख्यमंत्री, गुजरात**

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2012-14
Issued by SSP-AHD
Valid upto 31-12-2014
LWPP No. CPMG/GJ/45/2014
(Issued by CPMG GUJ. valid upto 31-12-2014)
Permitted to Post at AHD-PSO
from 18th to 25th of E.M.
Publishing on 15th of every month

# जन-आंदोलन

## करोड़ों महिलाओं की एक ही माँग
## 'रिहा करो... निर्दोष बापूजी को रिहा करो...'

निर्दोष संत पूज्य बापूजी को पिछले करीब १४ महीनों से बेबुनियाद आरोपों के आधार पर जेल में रखा गया है। उनकी रिहाई के लिए 'अखिल भारतीय नारी रक्षा मंच', अन्य अनेक महिला संगठनों तथा हजारों महिला भक्तों ने ३१ अगस्त को दिल्ली में हुई महा रैली के बाद ७ अक्टूबर को नागपुर (महा.) में और १३ अक्टूबर को अहमदाबाद में तथा देश के अन्य अनेक शहरों में विशाल 'नारी शक्ति मार्च' निकाला। इनकी माँग थी : ''करोड़ों लोगों के आस्था-केन्द्र धर्मगुरुओं, प्रसिद्ध गणमान्य हस्तियों एवं आम लोगों को नारी-सुरक्षा कानूनों की आड़ में फँसाकर देश की जड़ें काटने के लिए महिलाओं को मोहरा बनाया जा रहा है, इस पर रोक लगे। पूज्य संत श्री आशारामजी बापू पर दर्ज मामले में लड़की की मेडिकल जाँच रिपोर्ट, चिकित्सक के बयान, सुप्रसिद्ध वरिष्ठ न्यायविदों के वक्तव्यों से स्पष्ट होता है कि बापूजी निर्दोष हैं, फिर भी आज उन्हें जेल में रखे करीब १४ महीने हो गये हैं। २ महिलाओं के झूठे आरोपों के चलते आज लाखों महिलाओं को सड़कों पर उतरने के लिए मजबूर होना पड़ा। इन ७५ वर्षीय वयोवृद्ध संत को बढ़ती जा रही अत्यंत यातनाप्रद बीमारी के बावजूद मानवता के आधार पर भी जमानत नहीं मिल रही है। पूज्य बापूजी ने देश, समाज एवं संस्कृति के हित में बहुत बड़ा कार्य किया है। समाज में संयम-सदाचार की शिक्षा एवं वासनारहित प्रेम को बढ़ावा देनेवाले रक्षाबंधन, मातृ-पितृ पूजन दिवस जैसे पर्वों के पुनर्जागरण एवं व्यापक प्रचार-प्रसार के द्वारा नारी-सुरक्षा की समस्या का सच्चा हल लानेवाले तथा महिलाओं के सर्वांगीण विकास के लिए 'महिला उत्थान मंडलों' के माध्यम से अनेक अभियान चलानेवाले बापूजी जैसे संतों पर ऐसे बोगस चारित्रिक आरोप लगवाकर उन्हें जेल भिजवाना, यह महिला एवं समाज विकास को रोकने का बड़ा षड्यंत्र है। इसकी जाँच हो और बापूजी को जल्द-से-जल्द रिहा किया जाय, यह हमारी अपील है।''

इन रैलियों में महिलाओं का मानो सागर उमड़ पड़ा। कहीं घनघोर वर्षा व तूफान में तो कहीं दोपहर की कड़ी धूप में भी सत्य के पक्ष में हाथों में तख्तियाँ तथा सिर पर बापूजी को निर्दोष बतानेवाली भगवी टोपी पहनी हुई हजारों-हजारों जागरूक महिलाओं एवं युवतियों ने नारे लगाते हुए घंटों तक मार्च किया। यदि बापूजी पर लगे आरोप सच्चे होते तो क्या इतनी विशाल संख्या में महिलाएँ बापूजी का समर्थन करतीं ? महिलाओं का यह हुजूम बापूजी की निर्दोषता का जीता-जागता प्रमाण है।

देश के विभिन्न स्थानों - मुंबई, रायपुर, नासिक, इंदौर, देवास आदि में भी रैलियाँ एवं प्रदर्शन हुए। आजाद मैदान, मुंबई में विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल, सनातन संस्था, हिन्दू जनजागृति समिति आदि सज्जन हिन्दू संगठनों द्वारा विशाल धरना-प्रदर्शन किया गया।

''अब का कुप्रचार बहुत लम्बी साजिश है, खूब पैसे खर्च करके हुआ है और बहुत लोगों को इसमें जोड़ा गया है। अब के कुप्रचार का जो शिकार न बने और टिक गया तो भाई ! वह तो फिर पृथ्वी पर का देव है !'' - पूज्य बापूजी